वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 79	Year 8	Volume 4	January 2019 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

धर्म जिन के लिये सर्वोपरी है वह धर्म के लिये सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं।

महाभारत में एक प्रसंग आता है जो यह बताता है कि धर्म जिन के लिये सर्वोपरी है वह धर्म के लिये कुछ भी मूल्य चुका सकते हैं या बलिदान कर सकते हैं।

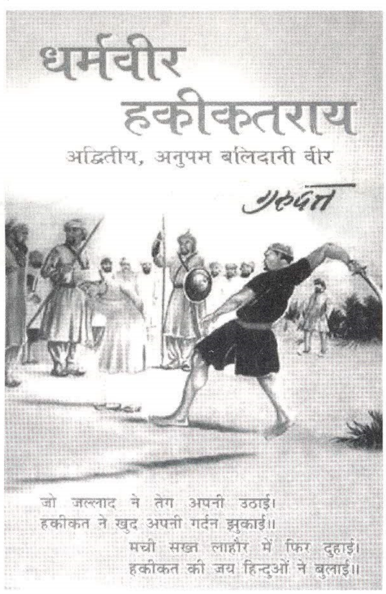

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। अश्वथामा इस लिये दुखी नहीं था कि उसके पिता द्रोणाचार्या युद्ध में वीरगती को प्राप्त हुए थे। वह दुखी इस लिए था क्योंकि ऐक योजनावध तारिके से पाण्डवों ने मिलकर उनका वध किया था। वह पाण्डवों से अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये तड़प रहा था। आधी रात का समय था। अश्वथामा को पता था कि पाण्डव अपने शयन कक्ष में गहरी नीन्द में सो रहे होंगे। वह उस शयन कक्ष में जाता है जहां पाण्डव पुत्र सो रहे थे, और र्धष्टाद्युमना, जिसने की उसके पिता द्रोण का वध किया था, वह उन सब को इसकी मार कर अपने क्रोध की अग्नि को शांत कर लेता है और कृपाचार्य को सूचना देकर वहां से चला जाता है।

प्रातः जब पाण्डव और द्रोपदी जब अपने पुत्रो को मरा हुआ देखते हैं जो स्वभाविक तौर पर फूट –फूट कर रोते हुए विलाप करते हैं। अर्जुन व द्रोपदी रोते हुए युधिष्टर से कहते हैं––––'' क्या हमने इस सब के लिये यह युध लड़ा व विजय प्राप्त की। युधिष्टर जो जबाव देते है वह बताता है कि धर्म की रक्षा क्या चीज है–––'' मेरे

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

अनुजो, में भी वैसे ही दुखी हूं जैसे आप सब हैं पर अगर हम युद्ध न लड़ते तो वह गलानी का जीवन इस से कहीं अधिक पीड़ा देने वाला होता। धर्म की रक्षा के लिये कोई भी मूल्य बहुत बड़ा नहीं।

परम पिता परमात्मा ने सृष्टि की आदि में सब मनुष्यों के हितार्थ वेद का ज्ञान (वेद अर्थात् ज्ञान) सब से पवित्र चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के द्वारा क्रमशः ऋक्, यजुः, साम और अथर्व) को प्रदान किया और कालांतर में वही ईश्वरप्रदत्त वेद–ज्ञान को धार्मिक महानुभावों ने सुरक्षित रखा और वह आज भी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रचलित और सुरक्षित हैं।

विश्व के सभी सुशिक्षित विद्वान लोग भी यही मानते हैं कि संसार का प्रथम ग्रंथ 'ऋग्वेद' है। प्रत्येक मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव एक दूसरे से अलग–अलग होते हैं और यही कारण है कि जब से यह दुनिया बनी है तब से आज तक अच्छे लोगे के साथ बुरे लोग भी विद्यामान रहते हैं और आगे भविष्य में भी इसी प्रकार रहेंगे। कोई भी युग ऐसा नही था, न ही वर्तमान में है और न ही भविष्य में होगा, जब मात्र अच्छे लोग होंगे या केवल बुरे लोग रहेंगे। सतयुग, द्वापर, त्रेता और वर्तमान कलियुग, हर युग में दोनों ही प्रकार के लोग रहे हैं। हर युग में धर्म के साथ अधर्म रहा है और आगे भी रहेगा क्योंकि मनुष्य अज्ञानवश काम, क्रोद्ध, लोभ, मोह और अंहकार की और खिंछता है और निजी स्वार्थो के वशिभूत गलतियां करता है , या यूं कहें कि गलतियों का पुतला है।

जी हां! गलतियां केवल मनुष्य ही करता है, पशु नहीं करते क्योंकि पशु प्रकृति नियम का उलंघन नही कर सकते क्योंकि उनमें कर्म करने की स्वतंत्रता नही है जैसे कि मनुष्य में है। स्वतंत्रता के कारण मनुष्य गलतियों पर गलतियां करता है और विधि के विधानुसार अपने कर्मो का फल भोगता है।

धर्म हमें कर्म करने की सही जानकारी देता हैं। मनुष्य जब धर्म के नियमों का पालन करता हुआ अपना जीवन यापन करता है तभी यह कहा जा सकता है कि वह धर्म की रक्षा कर रहा है। इसी तरह जब मनुष्य धर्म को नही जानता या फिर निजी स्वार्थो के वशिभूत धर्म की अवेहलना करता है तो ऐसे में धर्म उसकी रक्षा नहीं करता ' धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति की (हर परिस्थिति में) धर्म ही रक्षा करता है। साधारण भाषा में धर्म का अर्थ हैं 'मनुष्य के लिये करने योग्य कर्म या कर्तव्य'।

मनुष्य का क्या कर्तव्य है, उसे क्या करना चाहिये या क्या नही करना चाहिये। दार्शनिक भाषा में 'धर्म' की परिभाषा आर्ष ग्रंथो के अनेक ऋषियों ने अपने–अपने शब्दों में की है परन्तु उन सब का तात्पर्य एक ही है जैसे 'धारणाद्धर्ममित्याहुः' अर्थात जिसके धारण करने से किसी वस्तु की स्थिति रहती है, उसे 'धर्म' कहते हैं।

वैशिषिक दर्शन के अनुसार–

यतोऽभयुदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म।

तात्पर्य यह है कि जिससे इस संसार में भोग और मृत्योपरान्त मोक्ष की सिद्धी हो वह धर्म है अर्थात जिससे इहलोक और परलोक सुधरता है वह धर्म है।

जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरुप आचार है, उसी का नाम 'धर्म' और इससे विपरीत जो पक्षपातपूर्ण अन्यायचरण, सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरुप कर्म है, उसी को 'अधर्म' कहते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में बहुत ही सरल शब्दों में बताया है कि 'धर्म वह है जिसमें परस्पर किसी का विरोध न हो अर्थात धर्म सार्वभौम है जिसका किसी विशेष देश, जाति तथा काल से खास संबंध नही होता। जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ही मानने योग्य है, वह 'धर्म' कहलाता हैं।

जो न्यायचरण सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको 'धर्म' और जो अन्यायचरण सब के अहित के काम करने हैं उनको 'अधर्म' जानो (व्यवहारभानु)। धर्म की सरलतम परिभाषा है कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' अर्थात जैसा हमारी आत्मा को अच्छा लगे या व्यवहार आप अपने लिये दूसरों से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आप भी दूसरों से करें। ऐसा व्यवहार कदाचित न करें जैसा व्यवहार आप नहीं चाहते कि दूसरे आप के साथ कभी करें। बस यही धर्म है। अच्छा करोगे अच्छा पाओगे और बुरा करेंगे तो बुरा ही हाथ आएगा।

सत्य और न्यायपूर्ण मार्ग धर्म की रीढ़ की हडडी है,

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

इसीलिये जो लोग धर्म को समझ जाते है उनके लिये धर्म सर्वोपरी हो जाता है और वे धर्म के लिये सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

Editorial

Bhartendu Sood

Maharishi Dayanand Saraswati and Braham Yajna

Maharishi Dayanand Saraswati considered five yajna that includes Braham Yajna (Satsang with God), Agnihotra or Dev yajna (burning of odoriferous substances with clarified butter in the sacred fire to purify the environment), Pitri Yajna (service of living parents and elders in the family), Atithi Yagna (discharging the obligation of hospitality who visit you) and Baliveshva yajna(feeding and taking care of deprived); as important for any person as observance of five yams and five niyamas, cardinal moral principles.

Of the five yajna, he considered Braham yajna of the highest order.

What is this Santsang with God or Braham yajna? A man was going to listen to the discourse of a renowned sage in the nearby town, spotted his friend sitting lonely on the bank of river in absolute tranquility. He went up to his friend and said, "Oh! You are sitting lonely, why don't you join me for Satsang. A great seer is giving discourse." The man replied, "I am in Satsang with my God and this Satsang with the creator of this Universe is surely far more blissful than with any mortal."

The Satsang, what is being discussed here in simple language is communion with God in an environment, when one is away from the outer world. Here one shares his thoughts with the Creator of this Universe. Swamiji believed that it is the duty of every human being to enrich this planet with his good acts, which only he as a human is capable of performing, not other creatures like animals or insects. Such Satsang with God, aims at inner purification, uplifting of soul and making life more purposeful for achieving the twin goals of making this planet a better place to live and acquiring for self an eternal happiness/moksha. These are the moments of abandonment, self-forgetfulness and ecstasy. For some time, keep aside your family, friends, foes, wealthy possessions and feel as if you are in the lap of the creator, care taker and protector.

Thanks giving, tera shukriya hai, is the most important part of this Satsang. We need to thank him for everything what we possess including this Manush chola. Thanks giving is the source of eternal happiness in life. Praying for the happiness of all, and peace in all parts of Universe, is another inseparable part of this Satsang (Shanti Path). Avoid going with complaints and misgivings or speaking of your deprivation and inadequacies or down speaking others. Yes, pray to Him for helping us to remove our short comings like lust, greed, arrogance, anger and attachment and to endow us with godly qualities like patience, satisfaction, love and compassion for others, humility and Karuna i.e to strive to alleviate the miseries of the less fortunate ones. When God has given us the highest form of his creation, Mavav ka chola, he had certain expectations from us which He can't have from other creatures. We must justify God's trust in us by ensuring that we never deviate

from the moral & upright path, He wants us to improve ourselves. It is for this reason, Vedas say—Manur Bhav, be a man. For this, we must continue to evolve spiritually to be able to meet His expectation from us.

Communion with God can breed only good thoughts since God is the endless mine of good thoughts. In that solitude, the truth is realized because in your innermost being called Atma , hunger for truth is there. All great souls who realized God could achieve realization in such Satsangs only, whether it was Buddha, Nanak, Dayanand or rishis of yore whom God gave inspiration to write Vedas or other spiritual books. If a seer's company is Satsang, then God's company is a Satsang of much higher order and bliss since seer's source of enlightenment is also God.

If results are not coming with this Satsang reasons can be like distraction. For distraction , there can be countless reasons. This means one needs to practice it with sole focus on the creator. This calls for Shardha and absolute faith in God. But with Abhyasa-regular practice, restrain, observance of five yams and niyams-cardinal moral principles, this obstacle can be overcome.

Maharishi Dayanand Saraswati would daily move to a lonely place in the wee hours and then immerse himself in this Satsang with God. He opined that once you make it a habit, then your chances of going astray in your conduct are slim since your soul will send you the pre-signal.

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

Account Nos वही हैं-जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

सुखी रहने के लिये इस संसार में एक वैरागी की तरह रहें

वैरागी होने का अर्थ यह नहीं कि हम परिवार, समाज और देश से दूर भाग कर किसी जंगल, पर्वत या दूर ऐकांत जगह पर चले जायें। आप परिवार, समाज और देश में रहते हुये भी एक वैरागी की तरह रह कर सदैव रहने वाला सुख प्राप्त कर सकते है

स्वामी विवेकानन्द ने एक धाय का उदाहरण देकर इसे समझाया है । उनका कहना है जैसे एक धाय तुम्हारे बच्चे को गोद में लेती है, उसे खिलाती है और उसे इस प्रकार प्यार करती है, मानो वह उसी का बच्चा हो।

पर ज्यों ही तुम उसे काम से अलग कर देते हो, त्यों ही वह अपना बोरा–बिस्तर समेट तुरन्त घर छोड़ने को त्यार हो जाती है। उन बच्चों के प्रति उसका जो इतना प्रेम था, उसे वह बिलकुल भूल जाती हैं। एक साधारण धाय को तुम्हारें बच्चों को छोड़कर दूसरे के बच्चों को लेने में तनिक भी दुखः न होगा। तुम भी संसार में इसी तरह जीयों। किसी भी चीज को छोड़ते हुये तनिक भी दुख नहीं होना चाहिये। अपने बच्चों के प्रति भी यही भाव धारण करो। यदि तुम्हारा ईश्वर में विश्वास है, तो विश्वास करो कि ये सब चीजें, जिन्हें तुम अपना समझते हो, वास्तव में ईश्वर की हैं और उस महान ईश्वर ने कृपा करके आपको कुछ समय के भोगने के लिये दी थी न कि इनके साथ चिपकने की कोशिश करें। अगर चिपकने की कोशिश करेंगें भी, तब भी वह ईश्वर चिपकने नहीं देगा, समय पूरा होने पर अलग कर देगा और वह आप के दुख का कारण बनेगा। इस सुन्दर और बहुत उपयोगी भाव को इस मन्त्र में समझााया है,

ईशावास्यमिदॅ सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्ध्नम् ।।

जो कुछ दिख रहा जगत में, सब में ईश समाया है, त्याग भाव से जीवन जीना, यह ढ़लती फिरती छाया है, मोह माया के वशीभूत, क्यों करता मेरा मेरा है, भूल गया यह जगत बावरे, चिड़िया रैन बसेरा है, अति लोभ में कभी न फंसना, ऋषियों ने फरमाया है, किसके साथ गई बोलो, नश्वर माया और काया है।

जो व्यक्ति सब कर्मो को परमात्मा को अपर्ण करके और आसक्ति को त्यागकर कर्म करता है वह व्यक्ति जल में कमल के पत्ते की भान्ति पाप में लिप्त नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सब पदार्थों को त्यागमय भाव से भोगो पर इनके साथ आसक्त न हों

God is present everywhere even in the minutest part of element, in animate and inanimate both. Everything made by God is for the enjoyment of human being but without getting attached and without having any greed.

वाह ! इस सब खर्च के बाद अन्त में सिर्फ एक शादी की ऐलबम

पूनमजोत कौर सिधु

मेरी शादी में मेरे पिता ने मेरे सब अरमान पूरे कर दिये थे। जो मैने कहा या मांगा वह उन्होने खुशी से दिल खोल कर किया। मेरी कोई भी हसरत पूरे हुये बिना नहीं रही। आज जब कि मैं अपने पांव पर खड़ी हूं और अच्छा कमाती हूं तो मुझे यह सब सोच कर अपने पर ही शर्म आती है कि क्या इस सब के लिये एक करोड़ रूप्या खर्च करना ठीक था। मुझे अपनी गलती का ऐहसास हो रहा है, जिसके लिये मैं सदैव अपने आप को न केवल दोषी ही मानूंगी बल्कि माफ भी न कर पाउंगी। इतना सब करने के बाद अन्त में क्या रह गया ––ऐक ऐलबम , जो कि मैं शायद ही कभी देखती हूं।

चाहे सब की शादी में एक करोड़ खर्च न आता हो, परन्तु हमारे उतरी भारत , खास कर पंजाव में दस से तीस लाख कहीं नहीं गये। आम शादी में इतना खर्च आ जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या इस सब की आवश्यकता है?

आज हमारा ग्रामीण इलाका, खास कर पंजाब, बहुत सारी समस्याओं से जूझ रहा है, जैसे कि नवयुवकों द्वारा नशीली दवाओं का प्रयोग, कर्जा यानी कि देन दारी, जिस कारण कुछ किसानों द्वारा आत्महत्या करने की खबर भी यदा कदा पढ़ने को मिल जाती है, नवयुवकों के पास काम धन्धा नहीं है। यदि हम गहराई में जाये तो पता लगेगा कि इन सब समस्याओं के पीछे यह जो हमारा दिखावा करने की नई संस्कृति है, बहुत हद तक जिम्मेवार है। इन शादीयों में होता क्या है। खाने की बर्बादी, गन्द फैलता है, हर तरह की पोलयुशन फैलती है खासकर शोर शराबा , दिखावे में और लोगों को खुश करने में लाखों रूप्या खर्च कर दिया जाता है। मैं अभी एक शादी पर गई थी , वहां खीर ही दस तरह की थी। कोई केसर खीर तो कोई गुलकन्द खीर आदि आदि। जो खीर का प्राकृतिक स्वाद होता है वह एक में भी नहीं था। हो क्या रहा था, लोग पहले एक तरह की खीर को पलेट में ले रहें थे, थोड़ा चखा फिर पलेट को बिन में फैंक दिया और दूसरी पलेट ले ली। यह सब अनाज की बरबादी नही तो और क्या है।

इस का सब से गम्भीर परिणाम यह है कि, दूसरों को भी उस समाज में अपना स्थान बनाये रखने के लिये उतना ही पैसा या उस से भी अधिक खर्च करना पड़ता है। एक और नई संस्कृति पनप रही है–––यदि उसने अपने बच्चे के लिये किया तो मैं क्यों न करूं। अरे भाई यदि उसने खाई में छलांग मारी है तो आप बेवकुफों की तरह क्यों मार रहे हो? कुछ अपने भविष्य की भी सोचो। जिनके लिये किया , उनकी मांगे खत्म होने वाली नहीं है। जिस किसी को भी आसान कमाई की आदत पड़ जाती है वह मेहनत नहीं करता। उसको पता लग जाता है कि चाहे कार है या फिर हनीमून के लिये विदेश घूमना, उसके बेवकूफ मां बाप सब करेंगे। अगर बाप न भी करता है तो मां, बाप को

राजी कर लेगी।

एक रिपोर्ट के अनुसार पंजाब के 60 प्रतिशत व्यक्ति कर्ज के बोझ के नीचे बवे हुये है। इस में अषिक किसान लोग हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि यह कर्जा खेती के कार्य से नहीं बल्कि इन दिखावे और बढ़ चढ कर प्रर्दशन करने की प्रवृति, जिस में की ये खर्चीली शादियां मुख्य़ हैं, से ही पैदा होती है। खेती व कृषि के नाम पर कर्जा लेकर उसका प्रयोग इन खर्चीली शादीयों के लिये, जिस में की शानदार कारें तक दहेज में देना मुख्य है, एक आम बात है और तब से हमारी राजनैतिक दलों ने कर्जा माफी वोट खरीदने का साधन बना दिया है तो यह प्रथा रूकेगी नहीं अपितु बढ़ेगी। दुख की बात यह है कि यह पैसा कुछ ही घंटो में धुंऐ की तरह उड़ जाता है। और कर्ज की चिंता व्यक्ति को घेर लेती है और कई बार आत्महत्या का कारण बना जाता है।

प्रश्न है कि क्या हम यही पैसा अपनी कृषि को आधुनिक बनाने या फिर अपने बच्चों का भविष्य सुधारने के लिये नहीं कर सकते?

यह सच्चाई है कि हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान इस मामले में हमसे कहीं अधिक प्रगतिशील है। उन्होने ऐसी शादियों पर पूरी रोक लगा दी है। यहां तक कि कितने मेहमान होगे और कितने पकवान बनेगें उस का भी नियम बन गया है। परन्तु दुख की बात यह है कि हमारे इन राजनेताओं ने अपने वोटों के लिये जनता के दिल में पड़ोसी दिया के लिये इतनी नफरत पैदा कर दी है कि हम कुछ अच्छा भी नहीं देख या पहचान सकते। इसे ही कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि।

******

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः।
विद्यारत्नेन यो हीनः स हीनः सर्ववस्तुषु।।
– चाणक्यनीति

अर्थ – धन–सम्पत्ति से हीन व्यक्ति हीन नहीं होता, वह निश्चित धनिक है, लेकिन जो विद्यारत्न से रहित है, वह सब प्रकार से हीन होता है। जीवन में हर सम्भव प्रयास करके विद्या की प्राप्ति करनी–करानी चाहिए।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

स्वतन्त्र भारत में आर्य समाज की स्थिति

कृष्णचन्द्र गर्ग

पिछले 71 वर्षों में डी.ए.वी. (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक) स्कूल और कालिजों की संख्या बहुत बढ़ी है। बहुत से डी.ए.वी. स्कूलों में आर्य विद्वान धर्म शिक्षक के पदों पर नियुक्त हैं। जलंधर (पंजाब) में डी.ए. वी. विश्वद्यिालय की स्थापना हुई है। भारत में सरकार के बाद डी.ए.वी. सबसे बड़ा शिक्षा संस्थान है। कुछ थोड़े से डी.ए.वी. स्कूल विदेशों में भी हैं। आर्य समाजों ने भी कुछ स्कूल और कालिज खोले तथा कुछ आर्य गुरूकुल भी स्थापित हुए। बहुत सी नई आर्य समाजें तथा उनके भवन बने हैं। रोहतक (हरियाणा) में और अजमेर (राजस्थान) में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय बने हैं। पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में तथा सैंट्रल यूनिवर्सिटी हरियाणा में महर्षि दयानन्द पीठ की स्थापना हुई हुई है।

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद आर्य समाज का ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक साहित्य बहुत प्रकाशित हुआ है। आर्य समाज से सम्बन्धित कई साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं। आर्य समाज के छोटे–बड़े सम्मेलन देश में तथा विदेशों में काफी हुए हैं। पुस्तक मेलों में आर्य समाज के साहित्य को बेचने के लिए दुकानें (Stalls) लगाई जाती हैं। कुंभ आदि मेलों पर आर्य समाज का साहित्य मुफ्त या बहुत कम मूल्य पर दिया जाता है। वर्तमान में स्वामी रामदेव जी शिविरों द्वारा तथा टैलिविजन चैनलों द्वारा मूर्तिपूजा, ग्रह आदि अन्धविश्वास पर तगड़ी चोट मार रहे हैं।

सन 1957 में आर्य समाज ने पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह किया था। विषय था कि पंजाब में हिन्दुओं को अपने स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने दिया जाए। परन्तु वह असफल रहा था। फिर 1971 में पटियाला (पंजाब) आर्य समाज ने उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) में केस डाला कि आर्य, पंजाब में तथा देश में भाषायी अल्पसंख्यक हैं और उनकी मातृभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी है, अतः उन्हें पंजाब में अपने स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने दिया जाए जिसे उच्चतम न्यायालय ने स्वीकार कर लिया था। तब से पंजाब में हिन्दू संस्थाओं के सभी स्कूल हिन्दी भाषा को शिक्षा का माध्यम रख रहे हैं।

निस्सन्देह 1947 के पश्चात आर्य समाज का काम और प्रभाव बहुत कम हुआ है। बहुत सी आर्य समाजों के भवनों को ताले लग गए हैं या उन पर लोगों के व्यक्तिगत कब्जे हो गए हैं। जो आर्य समाजें चल रही हैं, एक आध को छोड़कर, उनमें आने वालों की संख्या बेहद कम है। आने वालों में युवाओं की संख्या तो और भी कम है। इसका कारण है कि आर्य समाज से सम्बन्धित लोगों में वह उत्साह और लग्न नहीं रही जो देश के स्वतन्त्र होने

से पहले थी। 1947 से पहले आर्य समाज एक नयी संस्था थी। इसकी विचारधारा लकीर से हटकर, तर्क पर और सत्य पर आधारित थी। उस समय बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने महर्षि दयानन्द को देखा था और उनके भाषण सुने थे। महर्षि दयानन्द की उच्च स्तर की विद्वता और उनके आकर्षक व्यक्तित्व का उन पर प्रभाव था। देश के स्वतन्त्र होने पर लोगों को व्यक्तिगत स्वार्थों को प्राथमिकता देने का अवसर मिल गया। लोग राजनैतिक दलों में शामिल हो गए, आर्य समाज उनके लिए गौण हो गया। एक और बड़ी बात–आर्यों के स्वार्थों के कारण आर्य समाज का संगठन बहुत कमजोर पड़ गया है।

अब राष्ट्रहित के मुद्दों पर तथा राष्ट्र की समस्याओं पर आर्य समाज पराय चुप है। टैलिविजन पर बहुत से विषयों पर बहस होती है, उनमें आर्य समाज का प्रतिनिधित्व न के बराबर रहता है। मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष आदि बड़े पाखण्ड और अन्धविश्वास पर आर्य समाज ने खुलकर बोलना बन्द कर दिया है। स्वतन्त्रता से पहले आर्य समाज के उत्सव खुले में सामाजिक स्थानों पर हुआ करते थे। आम जनता उनमें भाग लेती थी। वहां पर भाषणों के अतिरिक्त शास्त्रार्थ और प्रश्नोत्तर भी हुआ करते थे। अब वह नहीं हो रहा। अंग्रेजी शासन में बोलने और लिखने की जितनी स्वतन्त्रता थी वह अब नहीं है। महर्षि दयानन्द के भाषण सुनने बड़े–बड़े अंग्रेज अफसर आया करते थे। स्वामी जी दूसरे मजहबों के साथ–साथ ईसाईयत की भी समालोचना किया करते थे। अंग्रेज सरकार ने उनके बोलने और लिखने पर कभी पाबन्दी नहीं लगाई।

कृष्णचन्द्र गर्ग 831 सैक्टर 10,
पंचकूला, हरियाणा 0172–4010679

Why good fences make good neighbours?

Pamela Manasi

Fences are made not to divide but to respect the space of our neighbours, literally as well as figuratively. It is only when we tread on the private space of another person; infringe upon their freedom, that clashes happen between colleagues, friends and even within families. All that is needed to live in harmony with others is to respect their personal space.

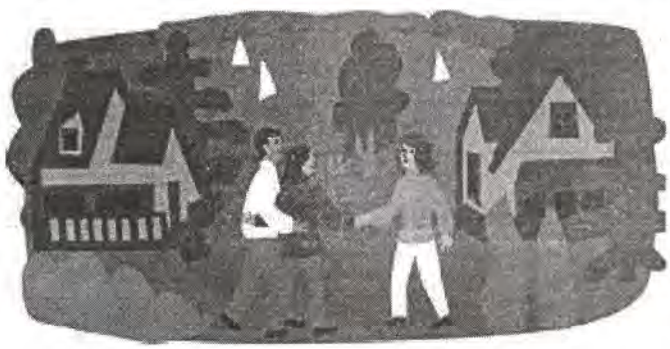

If I cherish my own freedom, it becomes my duty to recognise the other person's right to do so, too. That is why it is said that rights and duties cannot be divorced. It is only when we try laying down dictums for others, deny them the freedom of choice and trespass by invading their private space that we make ourselves unwelcome.

Good fences are all about a liberal and healthy attitude toward our fellow humans that would make the world a happier and more peaceful place.

बस हंसते रहो

रेणू जैन

जीवन की तमाम मुश्किलों, दुख और तनाव के बादलों को आप एक बिस्फोटक से उड़ा सकते हैं, इस बिस्फोटक का नाम हैं हंसी। यह एक ऐसा अस्त्र है जो कि सब को आपस में जोड़ता है, और घृणा की बदबू को दूर कर प्रेम की महक को फैलाता है। अमेरिका में तो हंसी इतनी दुर्लभ हो गई है कि वहां के लोगों को हंसी खुश रहने की गोलिया खानी पड़ती है कारण अमेरिका का समाज दिन–व–दिन अकेला होता जा रहा है, परन्तु हमारे देश में समाज आज भी आपस में बंधा हुआ है।

प्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डन का कहना है कि भारत में बैलों और गायों के गले में घुंघरू बांधे जाने का मनोविज्ञानिक कारण है। उनके गले की घंटियों की आवाज संगीत की तरह गूंजती है। पशुओं को संगीत प्यारा लगता है और वह उन्हें खुश रखता है। इसी के प्रभाव से दूध अधिक देती हैं। घोड़े और बैल अधिक काम करते है, जल्दी थकते नहीं। हंसी हार्दिक हो, दिल से निकली हो, तो वह भी संगीत जैसा प्रभाव ही छोड़ती है। अक्सर जो व्यक्ति काम करते हुये गुनगनाता रहता है, एक तो वह काम का आनन्द उठा रहा होता है और दूसरा वह दूसरे वयक्तियों की अपेक्षा अधिक काम करता है व धैर्यवान और चुस्त रहता है। एक और अन्वेशन के अनुसार खुश रहने वाले व्यक्ति अधिक जीते है। ईश्वर पर विश्वास भी आप की खुशी को बढ़ाता है, कारण, मुश्किल में हमें टूटने नहीं देता। ईश्वर पर विश्वास रखते हुये, धैर्य से अपने काम में अलग रहना, प्रसन्न रहने की कुंजी है।

महान विचारक अरस्तु के अनुसार––जो विपत्तियों में भी खुश रहना जानते हैं उन्हें कष्ट भी सुखकारी लगने लगता है। न मुस्कराने वालें लोगों को अपना आत्मनिरिक्षण करना चाहिये। देंखें किवे क्यो नहीं मुस्करा पा

रहे। कारण आपको सहज मिल जायेंगे। बात हैं उन कारणों को दूर करने की।
आप जिस काम में भी लगें हैं उसे गाते–गुनगुनाते हुए पूरा किजीयें
एक बार मार्टिन लूथर को लगने लगा कि उसके जीवन को उदासियों ने घेर लिया है। वे संसार को मिथ्या समझने लगे। उन्हें ऐसी हालत में देख कर उनकी पत्नी ने कहा———क्या स्वर्ग में भगवान मर गया है? लूथर ने कहा——नहीं , ऐसा कैसे हो सकता है? ईश्वर तो अजर, अमर है, अनादि और अन्त है, वह मर कैसे सकता है। पत्नी बोली ———परन्तु तुम्हें देख कर तो मुझे ऐसा ही आभास हो रहा है कि तुमने यह मान लिया है कि ईश्वर मर गया है। लूथर जोर से ठहाका मार कर हंस पढ़े और उन की उदासी गायव हो गई।

मशहूर हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिन का कहना था———मेरा दर्द किसी के हंसने की वजह हो सकती है, लेकिन मेरी हंसी किसी के भी दर्द की वजह नही हो सकती। महात्मा गाधीं का एक बड़ा गुण यह भी था कि वह कुछ येसा बोल देते थे कि सारी सभा हंसी से अंजू जाती थी जिये इंगलिश में सैंस ओफ हयुमर sense of humour कहा गया है। महात्मा का कहना था कि यदि मुझ में यह सैंस ओफ हयुमर sense of humour न होती तो बहुत पहले ही मर जाता। इस लिये हंसना अपनी आदत बना लें और अपने में sense of humour पैदा करें। यह आपके व्यक्तित्व को निखार देगा।

1. *पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगें।*

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. *विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।*

From *'asambhav'* (impossible) to all *'sambhav'* (possible)

Bhartendu Sood

Now when general elections to the 17th Lok Sabha are round the corner and campaigning in the form of shower of freebies or huge promises by the parties has already started, it reminds me of the incident of 1967 elections when elections to Lok Sabha and assemblies used to be held together.

Shimla town had a devout RSS worker and one time Arya Samaj preacher, by the name Daulat Ram Chauhan with hand to mouth existence. At that time, the BJP was in the garb of Jan Sangh . There were three well known names for Jan Sangh ticket for Shimla assembly seat, but everybody was stunned when the high command's choice fell on a humble Chauhan because of his squeakily clean image. We would go from house to house to canvass for him. Even having enough handbills was beyond his means. The Congress candidate was a wealthy person, who'd offer snacks and tea to his party workers which Chauhan or Jan Sangh was not in position to do. "Have your meals in your home and work for the party" was the directive. In a close contest Chauhan won by a few hundred votes for the state assembly and was made a Minister also.

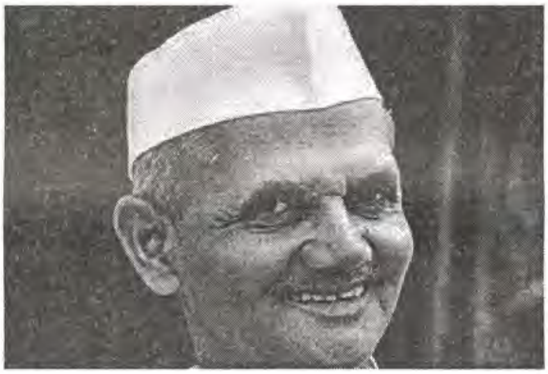

Now was the litmus test for Chauhan. To be a Minister in a place like Shimla meant that everyone claiming him to be his close buddy or relative and would expect personal favours like transfer, job etc. Meeting Mr Chauhan was not difficult since cars and security culture had not yet started and almost every day one could rub shoulders with him on the famous Mall. Chauhan would listen and act when it came to some common cause like upgrading of school, but his reply would be 'Asambhab'(impossible) when people would approach him for personal jobs. His highly principled approach left the residents disappointed and angry so much so, after a year he acquired the nick name 'Asambhav'. Then came the 1972 elections, his financial condition had not changed much, since the salary and perks of a Minister were very modest at that time. Despite his highly principled approach and austere living, he lost the election and was again a common man.

In the subsequent years things changed drastically in our democracy, principles based politics yielded place to sheer opportunism. Winn-ability replaced past service record and good moral conduct when it came to selection of candidates. Twenty first century saw new vote catching mantra---make promises without bothering whether these can be kept. Such promises acquired a new name 'jumala' after 2014 parliamentary elections and now all parties have embraced it without any reservation or qualms since it has already proved itself to be match winning stroke. I believe Mr Chauhan must be turning in his grave to see these changes in Indian polity.

ओइम

इतिहास के पननो से

1940 में आर्य समाज लाहौर मित्र मण्डल के नियम

उपनियम

कृणवन्तो विश्वमार्यम

1 प्रत्येक वैदिक सत्संगी को संन्ध्या हवन, स्वाध्याय, व्यायाम, प्राणायाम वेद आज्ञानुकुल त्रिषि दयानन्द द्वारा उपषित निर्धारित पद्धति के अनुसार नियमित रूप से करने होंगे।

2 प्रत्येक सत्संगी को प्रतिदिन एक वेद मन्त्र का स्वाध्याय करना चाहिये।

3 प्रत्येक सदस्य को एक वेदक दिनन्दिनी, डायरी, आवश्यकताअनुसार बनानी होगी, उस में अपने गुण दोष सभी लिखते रहना चाहिये और उसे समय समय पर आत्मनिरिक्षण के लिये पढते रहें।

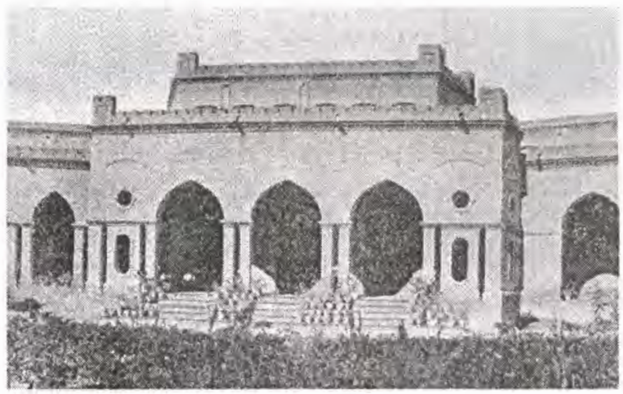

4 प्रत्येक सत्संगी को चाहिये किवह प्रधान को अपने संध्या हवन, स्वाध्याय, व्यायाम, योगाभ्यास के कार्यक्रम की विधी से प्रति मास सूचित करता रहे।

5 भारतवर्ष के प्रत्येक वैदिक सत्संग के सदस्य का मुख्य कर्तव्य होगा, कि वह आर्य मित्र मण्डल की और से निश्चित अधिवेशनों की तिथियों में, धोषित स्थान पर परिवार सहित अथवा विशेष अवस्था में परिवार का मुख्य व्यक्ति अवश्य पहुंचे।

6 इस मण्डल के सदस्य को कोई चन्दा नहीं देना होगा, हां समय समय पर संस्कार या प्रसन्नता के अवसरों पर जो भी मण्डल को देना चाहे वह स्वीकार होगा।

7 प्रत्येक सतसंगी को चाहिये कि वह अपने निकटवर्ती सत्संगियों से भाई चारे जैसा सम्बन्ध रखे, तथा एक दूसरे के दूख सुख में शामिल हों

8 यदि किसी सदस्य सत्संगी का असमय में स्वर्ग वास हो जाये और उसके पश्चात उसके परिवार का भरण पोष्ण अथवा उसके अनाथ बच्चों की शिक्षा का प्रश्न उपस्थित हो तो उसकी सब व्यवस्था आर्य मित्र मण्डल अथवा उसकी स्वकृति से निकटवर्ती सत्संगी करेगा। प्रत्येक सत्संगी का प्रधान कर्तव्य है कि वह समय पर मण्डल को सूचित करे।

9 भारत के उस प्रत्येक गांव कस्बे में वैदिक सत्संग को शुरू किया जायेगा जहां पांच से अधिक घर होंगे।

10 सत्संग के संचालको की नियुक्ति केन्द्र प्रधान करेगा।

11 संचालक उस क्षेत्र का सर्वोपरी होगा।

प्रत्येक सदस्य को स्वदेशी चीजों का प्रयोग अवश्य होगा।

Pitri yajna-- service of elders

Neela Sood

He was the wealthiest silk merchant of Ram Nagar town with a huge palatial house. Near his huge mansion, a small cobbler had also his shop cum small dwelling. Once, the rich merchant decided to go for pilgrimage as he believed that one could be near God only by remaining away from the workaday world.

He spent a few days in the holy place listening to the discourses of the learned priests and made good charities also. When he got convinced that he had done enough to please God, he set in for his home. On the way he halted to take rest under the tree. Haggard and fatigued he soon went in to slumber. In the sleep, he dreamt that a fairy appeared and introduced herself as the messenger of God. The rich man anxious to know the out come of the pilgrimage, made a humble request to the fairy," You are so close to God. Will you please enquire whether God was pleased with my pilgrimage" Fairy returned after some time and asked, "Are you a cobbler?" "No I am the richest silk merchant of Ram Nagar" merchant replied. "Then your pilgrimage is not successful. There is one Cobbler from the same town who has endeared God with his pilgrimage." disclosed the fairy.

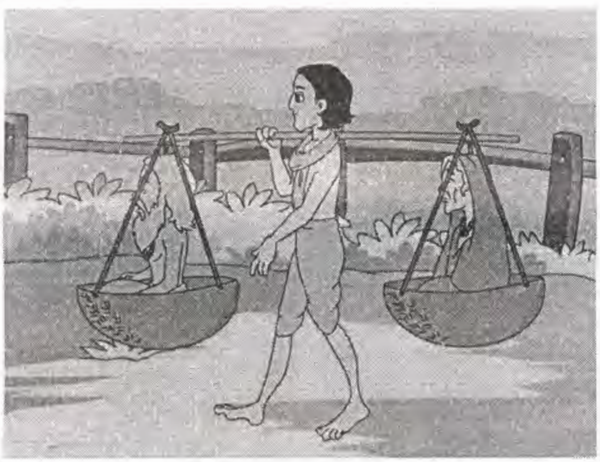

This revelation of the fairy, was enough to take the merchant out of his slumber. Upset and angry, he reached his village. Next day he enquired about the cobbler from his staff who after making enquiries informed him that the cobbler who lived quite close to his mansion, never went for any pilgrimage. Quite perplexed, the merchant didn't believe them and decided to visit the cobbler himself to know the real position.

In the bee hours, he knocked the door of cobbler's thatched hut. Quite perplexed to find him there, the cobbler asked merchant the reason of his visiting him. "Did you undertake any pilgrimage in the recent past?" Merchant asked the cobbler. "Sir, it is just not possible for me to go for pilgrimage since both my father and mother is disabled and I can't leave them unattended." The cobbler explained.

Thoughtful silence followed, then all of a sudden the cobbler said, "Sir, please don't take it as an act of discourtesy but I'll like to be excused for half an hour. I will join you there after. If you want, you can wait here." The merchant thought, "I must see what is all that important for which he left me here." He peeped from the small hole in the bamboo door. What he saw was that the cobbler had squatted, while on right thigh he had placed his old father's head, on left thigh, his old mother's head was resting. He was feeding them milk with spoon as one feeds the child. It continued for some time and when they refused to accept more milk, then he drank the left over.

By now, merchant had understood the meaning

of real pilgrimage. It is true that service of parents when they need children's physical support is far more important than moving places of religious importance. And that is real Yagna and pilgrimage—called pitri yajna in Vedas.

Nothing is static in this world, even the words of altruistic scholars become irrelevant and lose truism in the new situation and time. It applies to our shastras and holy books also. No doubt, five yajnas ---Braham yagna—communion with God and prayer in a peaceful place, Agnihotra for the purification of the environment, Pitri yajna to ensure that elderly in the family are taken care of well, Atithi yagna-discharging the obligation of hospitality to those who visit you and Baliveshva yajna to serve all those who are incapacitated in any manner or are dependence on us, were expected to be the foremost duty of each house holder, but in present time three yajnas which every house hold must practice are Braham yajna, Pitri yazna and Baliveshva yajna.

दूध, घास और कबीर

एक बार गुरू रामानन्द ने कबीर से कहा कि हे कबीर, आज श्राद्ध का दिन है, इसलिये पितरों के लिये खीर बनानी है। आप पितरों की खीर के लिये दूध ले आइये। वे दूध का बर्तन लेकर चल पड़े। चलते चलते उन्हें राह में एक मरी हुई गाय मिली। कबीर ने आसपास की घास को काट कर, गाय को डाल दिया और वहीं पर बैठ गये। जब

काफी समय बीत जाने तक भी कबीर नहीं आये और पितरों को भोजन कराने का समय नजदीक आने लगा, तो गुरू रामानन्द स्वयं दूध लेने चल पड़े। जब वह चलते चलते आगे पहुंचे तो देखा कि कबीर एक मरी गाय के पास ही बर्तन पास में रख कर बैठे हुये है। यह सब देखकर गुरू रामानन्द बोले———अरे कबीर तुम दूध लेने नहीं गये ? कबीर बोले————स्वामी जी यह गाय पहले घास खायेगी तभी दूध देगी। गुरू रामानन्द बोले———अरे कबीर तुम्हारी बुद्धी को क्या हो गया है। क्या मरी हुई गाय घास खा सकती है?।

कबीर बोले———गुरू देव, यह गाय तो आज मरी है, तब भी घास नहीं खाती, तो आपके सौ साल पहले मरे हुये पितर कैसे खीर खायेंगे?

कबीर की यह बात सुनकर गुरू रामानन्द हक्के बक्के थे, उन्हे अपनी भूल का अहसास हो गया था।

इस कथा का सार यह है कि हमें अपने बुजुर्गो का जीते जी ख्याल रखना चाहिये और उनकी सेवा करनी चाहिये। यही सच्चा श्राध है।

अक्सर होता क्या है ? ऐसी कहानियां कई बार पढ़ते हैं, अच्छी भी लगती है, मन को छूती भी है तर्क संगत भी लगती है। फिर भी पडित को बुलाकर श्राधों के दिनों में श्राध मनाते है, उन में बहुत सारे आर्य समाजी भी हैं।

क्या कहेंगे जब धर्म के नाम पर ऐसे बेहूदी प्रथाओं को समाज स्वकृति दे

उतर प्रदेश में बरेली शहर की यह घटना अभी अखबार में प्रकाशित हुई थी। 2009 में एक मुसलमान युंवती की शादी हुई। जब दो साल तक उनके सन्तान नहीं हुई तो उसके पति के परिवार ने उसको ही दोषी ठहरा कर उसका उत्पीड़न आरम्भ कर दिया । 2011 में उसका तलाक हो गया। युवती के माता पिता के परिवार के लिये उसको रखना मुश्किल हो रहा था तो उन्होने उस के पहले पति से अनुग्रह किया कि वह फिर से उसको अपना लें। पति ने कहा क्योंकि एक बार वे तलाक द्वारा अलग हो चुके हैं इसलिये उसे धार्मिक प्रथा के अनुसार उस को युवक के पिता के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर हलाल की प्रथा पूरी करनी होगी।

जब उसका पिता उसको कुछ समय बाद तलाक दे देगा तो वह उस से फिर से शादी करने के योग्य हो जायेगा। युवती की ईच्छा के विरूद्ध यह प्रथा पूरी की गई और उसकी शादी फिर से पहले वाले पति के साथ हो गई। 2017 में उसके पति ने उसे फिर तलाक दे दिया। इस बार उनके तलाकशुदा पति ने कहा कि वह हलाल की रसम इस बार उसके भाई के साथ पूरी करे।

लड़की की बहन ने साहस जुटाया और उन्हें अदालत का दरवाजा दिखाया। एक बड़ा प्रश्न यह है कि धर्म के नाम पर ऐसे बेहूदी प्रथाओं को समाज स्वकृति क्यों देता है।

तीन तलाक की बात ही ले लें बहुत से मुस्लिम देशों ने जिस में पाकिस्तान भी शामिल है इसे स्वकृति नहीं दी है। हज स्बस्डि की बात ही लें तो बहुत सारे देश नहीं देते हैं, उनका कहना है कि इसलाम में इसका प्रवधान नहीं हैं। और पाकिस्तन के वर्तमान प्रधानमन्त्री ने भी इसे बन्द कर दिया है। हमारे देश में इसे बन्द करने की बजाये, हिन्दुओं और सिक्खों को भी प्रांतीय सरकारों ने किसी न किसी रूप मे देना शुरू कर दिया है।

धर्म तो हमारे व्यवहार को अच्छा बनाने के लिये ईश्वर ने दिया न कि हमारे व्यवहार में अमानुषता, कूरता , घृणा और हिंसा लाने के लिये। मैं इस्लाम को बुरा नहीं कहूंगा क्योंकि हमारा हिन्दु धर्म भी इन सब से अछूता नहीं है। दोष समप्रदाय का नहीं, दोष है धर्म गुरूओं का जो की धर्म को अपने स्वार्थ के लिये तोड़ मरोड़ कर पेश करते रहें है। हमारे वैदिक धर्म का जितना बुरा हाल हमारे ब्राह्मण कहे जाने वाले वर्ग ने किया उसका उदाहरण मिलना भी मुश्किल है। अपने धर्म में ही जन्म अधारित जातपात पैदा कर एक दूसरे के लिये घृणा पैदा कर दी।

प्रिती भोज से लंगर--आर्य समाज सैक्टर- 7 व आर्य समाज-.32 ने एक नई दिशा दी है

आर्य समाज अच्छे प्रिति भोजों के लिये पहचान बना चुका है,जहां सत्संग में आये व्यक्तियों को आर्य समाज भवन के अन्दर बने हाल में प्रोफैशनल कुक द्वारा बनाया खाना परोसा जाता है। खाना खाने वाले को अपनी पलेट तक भी साफ नहीं करनी पड़ती, उसके लिये भी किराये का व्यक्ति होता है।

परन्तु पिछले साल आर्य समाज सैक्टर-7 व आर्य समाज-.32 के सभासदों द्वारा एक नई दिशा दी गई। उन्होने कहा हम ऋिषी दयानन्द के जन्म दिवस व बोद्ध उत्सव पर अपने सत्संग में आये व्यक्तियों को प्रिती भोज तक सिमित न रह कर समाज के बाहर के प्रांगन में सब के लिये लंगर करेंगे, हमें उन सभी को भी ऐसे मौके पर खाना खिला कर खुश होंगे जिनका आर्य समाज ने कोई सम्बन्ध नहीं। ताकि बाहर वाले लोग भी यह जाने कि आज ऋषी दयान्नद की जन्म दिवस व बोद्ध दिवस है।

बहुत ही अच्छा विचार है और इसे सफलता भी बहुत मिली। सभी सभासदों ने बहुत सेवाभाव से बाहर वालों को और सत्संगियों को लंगर का आनन्द दिया। और इस साल भी वैसे ही किया।

हम हर त्योहार पर चाहे न करें परन्तु आर्य समाज को बनाने वाले महान आत्मायें स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रधानन्द और महात्मा हंसराज का जन्मदिवस ऐसे ही मनानें की परम्परा को आरम्भ कर सकते हैं। मंहगी कुर्सीयों, महंगे निमन्त्रण पत्रों पर, दूर दूर से बुलायें वक्ताओं पर खर्च न कर, कई पकवान न बना कर दाल सब्जी और सादी चपाती व चावल तक इसे सिमित कर दें। इस बार मुझे सैक्टर 9 पंचकूला के आचार्य श्री जयदेव वैदिक को सुनने का मौका मिला, मैं इतना ही कह सकता हूं कि थोड़े समय में उनका दिया वक्तव्य, हजारों मीलों से बुलाये प्रसिद्व नामी विद्वानों से कही प्रभावशाली था। उन की एक बात जो बहुत इच्छी लगी कि उन्होने एक भी मिन्ट अधिक नहीं लिया और ठीक 12 बजे अपने व्क्तव्य को विश्राम दे दिया, यह अलग बात है कि उन की कसर बाद में पूरी कर दी गई।

बाहर वालों को खिला कर सुख की अनुभूति अलग ही होती है। सब से बड़ी बात उन बाहर के लोगों को भी पता लगें कि हमारे महान गुरू कौन थें। सैक्टर -7 व 32 आर्य समाज के प्रधान मन्त्री व सभी सदस्य बधाई के पात्र है।

A mission without rewards or favours

Navin Chawla

Mother Teresa and her sisters had no need to convert anyone as the abandoned destitute was their god

Kusum was about six when I first saw her at one of Mother Teresa's ashrams in Delhi where I was volunteering. Two things struck me about her: She was crippled and her smile. The sisters had taken her to orthopaedics but they agreed that no surgery could help the child.

For many years, the sisters at Missionaries of Charity looked after her. I took Kusum to a doctor who said her legs and hands were fractured in an accident or perhaps smashed deliberately. The one time I asked Kusum who might have done this, she burst into tears.

A little-known and intrepid band of sisters and brothers spread out each morning into the streets and slums of 130 countries to rescue the homeless, feed the hungry, treat the sick and leprosyaffected people. They also rescue abandoned children like Kusum and provide them lifelong care and love, which they have been deprived of after their parents cast them aside because of their physical deformities or their 'illegitimate' birth. The volunteers do their bit without any expectation of rewards or favours.

After Mother's death in 1997, the underlying spirit of its volunteers combined with their abiding faith in god propelled them to scour the streets for those who have fallen by the wayside. In the act of caring, they are one with god.

Mother Teresa once explained this simply by saying, "You can, at best, look after a few loved ones in your family. I can look after everyone because for me they are all god." She once explained it to a rich lady who saw her clean the ulcers of a leprosy patient. "I can never do this work, for all the money in the world", the lady said. "Nor can I," replied Mother Teresa. "But I do it for my love of him (god)."

At the brightly decorated wards for the leprosy patients, she would greet each one with a smile and kind words. She often stopped to talk to an old lady who kept repeating one question, "Mother, will my sons come to visit me this Diwali?" She would console her by saying, "You say a prayer to your god and I will say a prayer to mine and we together pray that your sons will visit you this year."

I gathered later that the lady had been the headmistress of a well-known public school but when her sons learnt that she had contracted leprosy they threw her out. But somehow she found her refuge. In all the years, Mother told me, the lady's sons never visited her. "They will never come back." After a few months later, her cot at the ward was occupied by someone else.

Mother Teresa did not make it her business to convert anyone. Her mind was not that of the 19th century proselytisers. If it had been so, she would have never been able to receive the abundant adulation and respect in the country including from late West Bengal chief minister Jyoti Basu. Mother Teresa could walk into his office without an appointment and would seldom come out empty-handed. While writing her biography, I once asked him what he (Basu), a Communist and an atheist, could possibly have in common with Mother Teresa. "We

both share a love for the poor," he replied.

I knew Mother Teresa for 23 years. Never once did she ever suggest that her religion might be superior to mine. In fact, we never discussed religion. However, it was not long before I came to understand why she and her sisters had no need to convert anyone.

The reason was — and still remains — that for her and members of her Order, their work is sustained by prayers, which gives them the strength to look after leprosy patients, abandoned infants and the destitute. For them, they are all embodiments of god. Where then is the need to convert when the abandoned destitute is their god? This enabled me to understand how Mother Teresa and the sisters after her continue to work with a smile.

The sisters rescued Kusum in 1989 and took care of her till her death in 2009. Kusum was a Hindu and her faith was maintained as a Hindu priest performed her last rites; with the sisters to mourn her passing.

Navin B Chawla, a former Chief election commissioner, is the biographer of Mother Teresa The views expressed are personal

सच्चाई से भागना ही भय है

भय व्यक्ति का सब से बड़ा शत्रु है। यह भय कई प्रकार का है। कभी जो हमारे पास धन सम्पदा है उसे खोने का भय है, कभी प्रेमी जनों को खोने का भय है, कभी यह भय है कि हमारी ईज्जत व सम्मान खत्म न हो जाये, कभी यह भय है कि मेरे जाने के बाद मेरे परिवार या व्यवसाय का क्या होगा, अक्सर ऐसे ही भय हमें चिन्तित रखते है और जब व्यक्ति चिन्तित होता है तो स्वभाविक है खुश भी नहीं रह सकता। यूं कहें कि भय और आपकी प्रसन्नता एक दूसरे के शत्रु हैं तो गलत नहीं होगा।

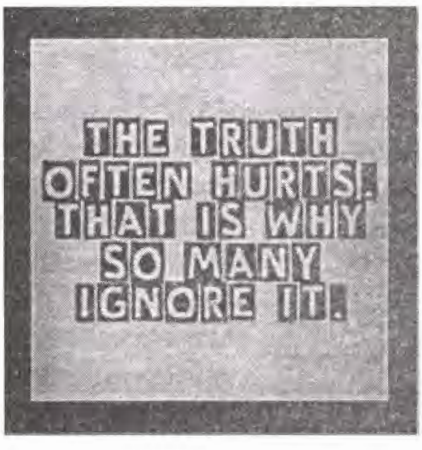

किसी ने सत्य ही कहा है
भय के कारण ही कोध आता है,
कोध के कारण ही द्वेष जन्म लेता है,
द्वेष से ही व्यक्ति के दुख जन्म लेते है।

असली ज्ञान प्राप्ती है अपने आप को भय से स्वतन्त्र करना

क्या कारण है जो यह तरह तरह के भय हमें सताते रहते हैं? क्या सभी भयभीत रहतें हैं या कुछ कम और कुछ अधिक? इसके समझने के लिये एक उदाहरण पेश कर रहा हूं। आपके शहर में एक डाक्टरों की टीम आई हुई है जो कि एक टैस्ट कर के बताती है कि क्या आप को कैंसर होने की सम्भावना है। हम में अधिक उस टैस्ट को नहीं करवायेंगे। कारण एक भय कि कहीं ऐसा न हों कि टैस्ट की रिपोर्ट यह खुलासा कर दे कि हमें कैंसर होने की सम्भावना है। इस से एक बात तो जाहिर है कि सच्चाई से आंखें मूंदना ही हमारे भय का कारण है। और यही है अपने आप से भागना।

हमारे शरीर के रोगों का ईलाज तो डाक्टर कर सकते हैं पर यह जो भय का रोग है इस का ईलाज शरीर के डाक्टर के पास नहीं श्है। इस का ईलाज तो अध्यात्मवाद ही कर सकता है। इस अध्यातमवाद का पहला नियम कहता है कि इस संसार में जो कुछ भी है वह ईश्वर का है, जो कि उसने मानव के प्रयोग के लिये बनाया है। मानव इस का प्रयोग तो कर सकता है पर इस का स्वामी नहीं बन सकता। इतिहास बताता है कि कि सिकन्दर जैसे महान योद्धा सारा संसार विजयी कर भी इस के मालिक नहीं बन सके। कहते हैं सिकन्दर बहुत ही युवा अवस्था में ऐसे रोग से बिमार हो गया जिसका ईलाज किसी के पास नहीं था। जब उसका अन्तिम समय नजदीक आया तो उसने अपने धर्म गुरू से कहा कि जब मेरा जनाजा ले जाया जाये तो मेरे हाथ कफन से बाहर रखना ताकी सब को यह मालुम हो जाये कि सारे संसार को फतह करने वाला सिकन्दर अपने साथ कुछ नहीं ले गया। कहने का अर्थ यह है कि इस संसार की हर चीज का स्वामी केवल ईश्वर है जो कि हमें प्रयोग के लिये देता है न कि इनका स्वामी बनने के लिये, चाहे वह राजा है या भिखारी। यह ज्ञान सिकन्दर को उस समय हुआ जब वह मृत्यु के नजदीक था, पहले इस लिये नहीं हुआ क्योंकि भौतिकवाद को सब कुछ मानकर उसने अध्यात्मवाद के नजदीक जाने की आवश्यकता ही महसूम नहीं की। जो हाल सिकन्दर का था वही आज के मानव का है। वह भौतिक वस्तुओं को पाने और संग्रह करने की होड़ में इतना व्यस्त रहता है कि वह अध्यात्मवाद को कुछ समय देना भी समय की बरबादी समझता है।

ऐसे में पहले तो बहुत सा जीवन का समय भौतिक वस्तुओं को पाने और संग्रह करने में लग जाता है और बाकी समय इस भय चिन्ता में कि कही कोई इसे ले न जाये। अध्यात्मवाद के ज्ञान के बिना सामने इन्तजार करती मृत्यु को भी नहीं देखता। जैसे बिल्ली को देखकर कबूतर आंखे मूंद लेता है वैसे ही आंखे मूंद लेता है। यही है अपने आप से भागना या सच्चाई से भागना और इस सच्चाई को न जानना ही भय का कारण है। जो व्यक्ति इस सच्चाई से वाकिफ हो जाता है कि मेरे पिछले जन्म के अच्छे कर्मो के कारण ही ईश्वर ने मुझे मानव का अनुपम चोला दिया है इस लिये कि मै उस के द्वारा बनाये इस सुन्दर विश्व का आनन्द उठाउं, उसके द्वारा दी गई वस्तुओं का प्रयोग अपने व दूसरों के सुख के लिये करू । मैने यहां सदा के लिये नहीं रहना। जब भगवान तुल्य श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण और दूसरी पुण्य आत्मायें नहीं रही तो मैं भी एक दिन मृत्यु को प्राप्त हूंगा। कुछ भी मेरे साथ नहीं जाना है सिवाये मेरे अच्छे कर्म। इस लिये इस भौतिक सम्पदा का मालिक बनने के जगह, अपने कर्मो को अच्छा बनाऊ। यह सत्य है कि जो मृत्यु को सदैव ध्यान में रखता है, वह तेजी से सोचता है, तेजी से कार्य करता है, फलतः लक्ष्य की और तेजी से अग्रसर होता है व शीघ्र मन्जिल को पाता है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि परमात्मा हमें हर प्रकार के भय से दूर रखें।

अभय करो प्रभु, अभय करो हमें।
भूमी से न भय हो, आकाश से न भय हो।
मित्रों से न भय हो, शत्रु से न भय हो।
भय हो न सामने से, पीछे से न भय हो।
दायें से न भय हो , न बायें से ही भय हो।
दिन में न भय हो , न रात में ही भय हो।
शत्रु मेरा कोई न हो, सब ही दिशाएं मेरी मित्र बनें।
भय न हो, मित्रता की जय हो।

वेद की यह प्रार्थना इस बात को बताती है कि भय व्यक्ति का सब से बड़ा शत्रु है।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Sudesh Seth celebrated her grandson's birthday with slum children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.
शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

श्री संजीव गोयल

श्री सुकांत एवं श्रीमती कांता कांसल

श्री विनेय खन्ना

श्रीमती सुफी चावला

श्री अवनि गुप्ता

श्रीमती एवं श्री सागर अरोडा

श्रीमती सुदेश सेठ

श्री देवेन्द्र चैथले

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in